ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

(A UGC-recognized Peer-reviewed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 46 ● Vol. 181-182 ● Issue: January-June, 2019 (II)

Acharya Mahapragya Birth Centenary 1920-2020

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

Editorial and Advisory Board

Prof. Kuldip Chand Agnihotri
Vice-Chancellor
Central University of Himachal Pradesh
Dharamshala, Dist. Kangra, Himachal Pradesh-176215

Prof. M.R. Gelra
Founder Vice-Chancellor and Emeritus Professor
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341306, Rajasthan

Prof. Naresh Dadhich
Former Vice Chancellor
Vardhaman Mahaveer Open University,
Kota, Rajasthan

Prof. R.S. Yadav
Former Dean, Faculty of Social Sciences
Kurukshetra University,
Kurukshetra, Haryana

Prof. S.R. Vyas
Former HOD, Dept. of Philosophy, MLSU, Udaipur
Former Member Secretary, ICPR, HRD Ministry, GOI, New Delhi

Prof. Dayanand Bhargava
Emeritus Professor, JVBI, Ladnun
Former Chairman, Veda-Vijnana,
J.R. Rajasthan Sanskrit Univesity, Jaipur

Prof. Arun Kumar Mukerjee
Former Professor, Dept. of Western Philosophy
Jadavpur University, Kolkata (W.B.)

ISSN 0974-8857

Tulsī Prajñā

(A UGC-recognized Peer-reviewed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 46 **Vol. 181-182** **Issue: January-June, 2019 (II)**

Patron
Prof. Bachhraj Dugar
(Vice-Chancellor)

Editor
Dr. Samani Bhaskar Pragya
Dr. Samani Amal Pragya
Dr. Samani Samyaktva Pragya

Managing Editor
Mohan Siyol

Publisher
Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun 341306 (Raj.) India

Contact us: **tulsiprajnarj@gmail.com**
9887111345

पुरोवाक्

साहित्य का जन्म अनुभव की अतल गहराइयों से होता है। उसका प्रकाश सदियों को प्रकाशित करता है। साहित्यकार समाज का मुख और मस्तिष्क दोनों होता है। महान् साहित्यकारों की गौरवमयी श्रृंखला में आचार्य महाप्रज्ञ का नाम स्तुत्य, वंदनीय एवं स्मरणीय है। उनकी कृतियों में मार्गदर्शन ही नहीं, अपितु युगीन समस्याओं का समाधान भी प्राप्त होता है। उनके द्वारा प्रदत्त प्रेक्षाध्यान, जीवन–विज्ञान सामान्य जनता के साथ–साथ आधुनिक विश्रृंखलित समाज के लिए भी दिशायंत्र के समान हैं। प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी एवं राजस्थानी आदि अनेक भाषाओं में एवं विविध विधाओं में उत्कृष्ट कोटि के ग्रंथों का सृजन कर साहित्य–क्षेत्र को विपुल सम्पदा प्रदान की है।

आचार्य महाप्रज्ञ भारतीय संत परम्परा के एक ऐसे महान् दार्शनिक, चिंतक एवं मनीषी आचार्य थे, जिन्होंने भारतीय चिंतन एवं विरासत को संरक्षित–संवर्धित रखने का महनीय कार्य किया। उन्होंने अपनी ज्ञान–चेतना तथा स्व को इतना विस्तारित किया कि वे प्राणीमात्र के हो गए, उनकी अजस्र करुणा प्राणीमात्र तक व्यापक हो गई। ध्यान में स्वयं को निमग्न कर अपनी विशिष्ट प्रज्ञा का जागरण किया, और उसी प्रज्ञामयी दृष्टि से आगमों का मंथन कर डाला। उनके आचार में अहिंसा, व्यवहार में सौम्यता और विचार में अनेकान्त इतने घनीभूत हो गए कि जो कहा, जो चाहा, वह होकर रहा। आंखों से बहती करुणा, आशीर्वाद में उठा हाथ, रोम–रोम से निःसृत होते मैत्री–भाव स्वतः ही सबको सम्मोहित–से कर लेते और अहर्निश ऊर्ध्वारोहण के लिए प्रेरित करते थे।

आचार्य महाप्रज्ञ भविष्यदृष्टा थे। उनकी भविष्यदर्शिता प्रकट होती है जब वे नॉलेज सिटी के स्थान पर विज़डम सिटी की बात करते हैं, जब वे प्रचलित आर्थिक विचारों के स्थान पर सापेक्ष अर्थशास्त्र की बात करते हैं, जब वे मानसिक परिष्कार के स्थान पर भाव–परिष्कार की बात करते हैं और जब वे प्रचलित शिक्षा पद्धतियों के स्थान पर संतुलित एवं सर्वांगीण शिक्षा की बात करते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा–यात्रा के माध्यम से समाज, देश एवं विश्व को नैतिकता का जो संदेश दिया, उसका कोई सानी नहीं है। शिक्षा, शोध, स्वास्थ्य, सेवा, योग एवं अध्यात्म आदि क्षेत्रों में मानव जाति का विकास उनके ऊर्जावान व्यक्तित्व का ही परिणाम था।

आचार्य महाप्रज्ञ जैन विश्वभारती संस्थान के द्वितीय अनुशास्ता एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ के दशम अधिशास्ता थे। वे न केवल अनुशास्ता या अधिशास्ता थे, अपितु ज्ञान, दर्शन, चारित्र के त्रिवेणी संगम भी थे।

आज सम्पूर्ण धर्मसंघ उनके शताब्दी वर्ष को बड़े ही हर्षोल्लासपूर्वक मना रहा है। इस शुभ अवसर पर जैन विश्वभारती संस्थान भी महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त अवदानों पर बौद्धिक एवं दार्शनिक आलेख लिखकर इस शताब्दी वर्ष से जुड़ना चाहता है। एतदर्थ प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा 'आचार्य महाप्रज्ञ का प्राच्य विद्याओं को अवदान' विषयक संगोष्ठी की समायोजना सुनिश्चित हुई। उस आयोजना में जितने पत्र–वाचन संभावित हुए, उन सबको संग्रहीत कर आचार्य महाप्रज्ञ तुलसी–प्रज्ञा विशेषांक का स्वरूप प्रदान किया गया है। सम्पादित–संकलित यह विशेषांक अपने अनुशास्ता के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में समर्पित है। आशा है यह विशेषांक पाठक वर्ग के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

–प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति
जैन विश्वभारती संस्थान

सम्पादकीय

आचार्य अकलंक देव ने तत्त्वार्थराजवार्तिक (9/24) में आचार्य शब्द का निरुक्त करते हुए कहा है– **आचरन्ति यस्मात् व्रतानीत्याचार्यः** अर्थात् जिनसे व्रतों को धारण कर उनका आचरण किया जाता है, वे आचार्य हैं। जो स्वयं सम्यक्, दर्शन, ज्ञान आदि गुणों के धारक होते हैं और अन्य भव्य जीवों को भी आत्मकल्याण की ओर प्रस्थान हेतु मार्ग प्रशस्त करते हैं, वे आचार्य कहलाते हैं। भारत देश का यह सौभाग्य है कि यहां अनेक साधु संतों ने अपने ज्ञान, ध्यान, तप एवं सदाचार से आत्मकल्याण के साथ–साथ आस–पास के वातावरण को भी विशुद्ध किया। इसी परंपरा में बीसवीं सदी में आचार्य महाप्रज्ञ का नाम अध्यात्म प्रतीक के रूप में लिया जाता है।

आचार्य महाप्रज्ञ कुशल प्रवचनकार होने के साथ–साथ एक महान लेखक, महान श्रुतधर और महान साहित्यकार थे। आचार्य महाप्रज्ञ सृजन ऊर्जा के केन्द्र थे। उन्होंने विविध विषयों पर सैंकड़ो ग्रंथ लिखे। प्रत्येक ग्रंथ में उनका मौलिक चिंतन प्रस्फुटित हुआ। उनके ग्रंथ जहां साहित्य जगत् की अमूल्य धरोहर हैं, वहां मानवता की विशिष्ट सेवा है। धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों पर शोध करने वाले विद्वानों के लिए आचार्य महाप्रज्ञ एक विश्वकोश की तरह थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान के रूप में एक विशिष्ट वैज्ञानिक साधना–पद्धति को सीधे आम आदमी से जोड़ा। आचार्य महाप्रज्ञ ने धार्मिक एवं बौद्धिक जगत के बीच नए क्षितिज उद्घाटित किए और एक प्रतिष्ठित संत के रूप में उभरे। समय से पहले ही किसी भी स्थिति व वस्तु के विश्लेषण करने की अपूर्व व अद्भुत अर्हता ने आचार्य महाप्रज्ञ को दूरदर्शी के रूप में स्थापित किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी असाधारण प्रतिभा से विज्ञान व अध्यात्म को समस्त कार्यों में एक दूसरे का पूरक बताया। उनका स्पष्ट मंतव्य था कि विज्ञान ने धर्म को विनष्ट नहीं किया है, अपितु उसने तो धर्म के क्षेत्र में नया सिद्धांत प्रतिपादित किया है।

आचार्य महाप्रज्ञ प्रकृति से कवि भी थे। संस्कृत, प्राकृत व अन्य कई भाषाओं में पद्य–रचना करने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने आशुकविता के रूप में धाराप्रवाह श्लोक बनाकर प्रस्तुत किए तो पेन्सिलवानिया–अमेरिका के संस्कृतभाषाविद् डॉ. नोर्मन ब्राउन सहित पूना, बनारस आदि के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान विस्मित हो गए। संस्कृत भाषा में 'संबोधि', 'अश्रुवीणा', 'मुकुलम्', 'अतुला'–तुला' आदि तथा हिन्दी भाषा में 'ऋषभायण' आदि ग्रंथ उनकी रचनाधर्मिता के जीवंत प्रमाण हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ जैन विश्वभारती संस्थान के द्वितीय अनुशास्ता थे। हमें अत्यन्त गर्व है कि संस्थान के अनुशास्ता के रूप में उनका आध्यात्मिक नेतृत्व संस्थान परिवार के भीतर नव ऊर्जा का संचार करता था। ऐसे महापुरुष का जन्म शताब्दी वर्ष जैन विश्वभारती संस्थान परिवार के हृदय में श्रद्धापूर्ण सृजन का अवसर बना। संस्थान के कुलपति माननीय प्रो. बच्छराज दूगड़ के नेतृत्व तथा प्रेरणा से प्राकृत एवं संस्कृत विभाग ने ''आचार्य महाप्रज्ञ का प्राच्य विद्याओं को अवदान'' विषयक सेमिनार का आयोजन करने का सुनिश्चय किया गया। एतदर्थ चेन्नई के सुप्रसिद्ध श्रावक श्रीमान् सूरजमलजी धोका का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का अथ से इति तक प्रारूप– निर्माण करने एवं उसे संयोजित करने में विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ समणी संगीतप्रज्ञा का श्रम सराहनीय है। प्रो. दामोदर शास्त्री ने इन शोध आलेखों का सूक्ष्मेक्षिया दृष्टि से निरीक्षण कर हमें कृतार्थ किया। सेमिनार में पठित एवं कतिपय अन्य शोध आलेखों का संकलन है– ''तुलसीप्रज्ञा'' का यह विशेषांक। आचार्य महाप्रज्ञ के प्राच्य विद्याओं के अवदान को रेखांकित करने तथा अपने अनुशास्ता के प्रति श्रद्धाभाव–अभिव्यक्ति का यह विनम्र प्रयास विद्वत्परिषद् के लिए उपयोगी बने, ऐसी मंगलकामना।

श्रद्धाप्रणत

सम्पादक मण्डल

Tulsī Prajñā

Contents

आचार्य महाप्रज्ञ : एक विहंगावलोकन 9
प्रो. नलिन के. शास्त्री

आधुनिक युग को आचार्य महाप्रज्ञ का योगदान 14
प्रो. दयानन्द भार्गव

आचार्य महाप्रज्ञ का आगम–सम्पादन–वैशिष्ट्य 26
प्रो. दामोदर शास्त्री

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य में अष्टांग योग का विवेचन 36
प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा
डॉ. समणी श्रेयसप्रज्ञा

आचार्य महाप्रज्ञ का जैन न्याय को अवदान 53
प्रो. धर्मचन्द जैन

प्राच्य विद्या के उद्धार में आचार्य महाप्रज्ञ का योगदान 66
प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा

आचार्य महाप्रज्ञ की आगम सम्पादनकला 72
प्रो. प्रेम सुमन जैन

जैन योग के युगीन अनुसंधाता : आचार्य महाप्रज्ञ 83
प्रो. समणी मल्लिप्रज्ञा

अनेकान्त व्यवहार–दर्शन के पुरस्कर्ता : आचार्य महाप्रज्ञ 90
प्रो. अशोक कुमार जैन

अहिंसक समाज संरचना : आचार्य महाप्रज्ञ दर्शन 98
प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा

काव्यभाषा और रत्नपालचरितम् 108
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय

आचार्य महाप्रज्ञ की दृष्टि में जीवन 117
प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह

आचार्य महाप्रज्ञ का प्राकृत व्याकरण को अवदान 121
प्रो. कल्पना जैन

जैनाचार जगत् में आचार्य महाप्रज्ञ का मौलिक अवदान 130
डॉ. समणी शशिप्रज्ञा

आचार्य महाप्रज्ञ के वाङ्मय में अनेकान्त का अनुप्रयोग 140
साध्वी शरदयशा (समणी शारदाप्रज्ञा)
डॉ. समणी भास्करप्रज्ञा

प्राच्य भाषाओं के विकास में आचार्य महाप्रज्ञ का योगदान 148
(प्राकृत भाषा के विशेष संदर्भ में)
डॉ. वंदना मेहता

आचार्य महाप्रज्ञ के आध्यात्मिक चिन्तन की प्रासंगिकता 155
डॉ. ज्योतिबाबू जैन

Ahiṃsā Yātrā: Āchārya Mahāprajña's Initiative of Transforming Personal and Structural Violence 161
Dr Samani Rohini Pragya

Value-based HRM for a sustainable socio-economic order, with a special reference to HH Acharya Shree Mahaprajna : A Phenomenological Study 170
Richa Jain

Change of Heart for Value-based Human Resource Management: HH Acharya Mahaprajna's Doctrine 185
Shailee Jain

आचार्य महाप्रज्ञ : वाङ्मय परिचय 200
मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा

Tulsī Prajñā Research Journal (TPRJ)

Guidelines for writers

1. It is policy decision for TPRJ that editors reserve the right to make final alterations in the text, on linguistic and stylish grounds, so that entry conforms to the uniform standard required for the journal.
2. Only Original, Authentic, Useful, Unpublished articles/papers will be accepted. The article once published in TPRJ cannot be published elsewhere without permission means the Copy right of the article published in the TPRJ shall remain vested with the journal.
3. Two Type script copies of the Manuscript along with Soft copy (Word File) in CD or email has to be submitted on appropriate addresses.
4. Writers are expected to provide short resume including contact details: post address, email ID and Phone Numbers. (Format is provided on previous page)
5. The paper can be sent to authors again for upgrading it on basis of comments from experts.
6. The following are instructions for preparing the script.
   - Format of Article: Abstract (not more than 200 words), Key Words, Introduction, Problem, Research Methodology if any, Main Content, Research Design if any, Findings, Conclusion, Reference, Bibliography.
   - Font type: Times New Roman /Krutidev010 respectively for English/Hindi.
   - Font Size: English 14/12/10 respectively for Heading/Main body/Reference. Hindi 16/14/12 respectively for Heading/ Main body/Reference.
   - Spacing : One and half for lines and double for Paragraph
   - Words: 4000-6000 words i.e. 10-15 Typed A4 Size Papers
   - Reference Type: MLA (8th edition)

     Link up for more help: http://www.easybib.com/guides/citation-guides/mla-8/ for examples: for journals and books respectively

     Kincaid, Jamaica. "In History." Callaloo, vol. 24, no. 2, Spring 2001, pp. 620-26.

     Jacobs, Alan. The Pleasures of Reading in an Age of Distraction. Oxford UP, 2011.
   - Reference Style : End note
   - Alignment: Justify
   - Quotation: verbatim et literatim (exact) with original: three dots to indicate ellipsis : in double inverted commas.
   - For the Manuscript prepared in English, The Words and /or citations from Sanskrit or any language other than English have to be in Roman Script, fully italicize and with standard diacritical marks.

RAJ HIN 28340/75

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ
प्रकाशन सूची

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
01.	अंगुत्तर निकाय भाग-1	श्री श्रीचंद रामपुरिया	50
02.	अंगुत्तर निकाय भाग-2	श्री श्रीचंद रामपुरिया	60
03.	श्रमण सूक्त	श्री श्रीचंद रामपुरिया	150
04.	तीर्थंकर वर्द्धमान जीवन प्रसंग	श्री श्रीचंद रामपुरिया	80
05.	आवश्यक निर्युक्ति खण्ड-1	डॉ. समणी कुसुम प्रज्ञा	400
06.	रत्नपालचरितम्	आचार्य महाप्रज्ञ (अनुवादक डॉ. हरिशंकर पाण्डेय)	100
07.	जैव प्रबोधन : जैन दृष्टि	प्रो. बच्छराज दूगड़	140
08.	भिक्षु न्यायकर्णिका	पं. विश्वनाथ मिश्र	120
09.	जैन इतिहास एवं संस्कृति	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा	120
10.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश (वा.प्र. आचार्य तुलसी, मु.सं. आचार्य महाश्रमण)	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	995
11.	योग वैशिष्ट्य	डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा	400
12.	आचार्यश्री महाश्रमण : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्त्व	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	100
13.	जैन न्याय पारिभाषिक कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	500
14.	जैन संस्कृति और जीवन मूल्य	डॉ. समणी ऋजुप्रज्ञा	100
15.	दृष्टांत कोष	प्रो. दामोदर शास्त्री	375
16.	Jain Biology	Late Shri Jetha Lal S. Zaveri /Prof. Muni Mahendra Kumar	200
17.	Samayasara	Late Shri Jetha Lal S. Zaveri / Prof. Muni Mahendra Kumar	450
18.	Jain Paribhasika Sabdakosa	Prof. Muni Mahendra Kumar	1125
19.	Science in Jainism	Prof. M.R. Gelra	200
20.	Bhagavai-2	Acharya Mahaprajna, Eng. trans. by Prof. Muni Mahendra, Kumar & Late Dr. Nathmal Tatia	1695
21.	JVB & JVBU Research Work	Dr. Samani Agam Prajna / Dr. Vandana Mehta	100
22.	The Enigma of the Universe	Prof. Muni Mahendra Kumar	500
23.	Jainism in Modern Perspective (An Enquiry into the Relevance of Jainism in the Modern Context of the World)	Dr. Samani Chaitanya Prajna Prof. Samari Kanta Samanta	250
24.	Sound of Silence	Acharya Mahaprajna	140
25.	Jain Theory of Knowledge and Cognitive Science (An Interdisciplinary Approach)	Dr. Samani Chaitya Prajna	250
26.	Non-violence Relative Economics and A New Social Order	Prof. B.R. Dugar/Dr. Satya Prajna/Dr. Samani Ritu Prajna	500
27.	Environmental Ethics and Its Relevance : An Analytical Study	Dr. Pooja Sharma	225
28.	English for the Marginalized (Deliberations on Teaching English to the Marginalized Learners in India)	Sanjay Goyal (ed.)	175
29.	Bibliography of Jaina Literature, Vol.- I	Dr. Samani Agam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya Dr. Vandana Mehta	1200
30.	Bibliography of Jaina Literature, Vol.- II	Dr. Samani Agam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya Dr. Vandana Mehta	1200
31.	Science Perspectives of Jainism	Prof. Samani Chaitanya Prajna, Prof. Narendra Bhandari Prof. Narayan Lal Kachhara	2000

सम्पादक; प्रकाशक - जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं; मुद्रक - तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर (राजस्थान)